समाजशास्त्रीय सिद्धांत: प्रकार्यवाद I

(Sociological Theory: Functionalism I)

डॉ. अनुराग कुमार पाण्डेय

सहायक प्रोफेसर

समाजशास्त्र विभाग

जे. एस. हिन्दू (पी. जी.) कॉलेज, अमरोहा

प्रकार्यवाद क्या है?

- समाजशास्त्र तथा अन्य सामाजिक विज्ञानों में अत्यंत प्राचीन व प्रभुत्वशाली सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य
- प्रकार्यवाद को प्रकार्यवादी परिप्रेक्ष्य भी कहा जाता है।
- समाज अथवा संस्कृति की स्थिरता व निरंतरता को बनाए रखने के लिए नितांत आवश्यक है कि समस्त इकाइयां संगठित होकर कार्य करें।
- यह संगठन व्यवस्था तभी अस्तित्व में बनी रह सकती है, जब विभिन्न तत्व अथवा इकाइयां अपना–अपना योगदान इस संगठन या व्यवस्था को बनाए रखने में दें। यह योगदान इकाइयां अपनी–अपनी 'निर्धारित' या 'पूर्व निश्चित' भूमिका को करते हुए ही करती हैं या कर सकती हैं।
- कोई भी समाज (आधुनिक या आदिम) कई पीढ़ियों की निरंतर अंतःक्रियाओं का परिणाम होता है।
- प्रत्येक इकाइयाँ एक–दूसरे पर अंतर्संबंधित होती हैं तथा संपूर्णता के रूप में समाज की बेहतरी में सहयोग करते हैं।

प्रकार्य

- समाजशास्त्र में प्रकार्य शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 19वीं शताब्दी में हर्बर्ट स्पेन्सर द्वारा किया गया। स्पेन्सर समाज तथा जैविकीय सावयव की कार्य प्रणाली में सादृश्यता के संदर्भ में इस अवधारणा का प्रयोग करते हैं।
- प्रकार्य की अवधारणा को व्यवस्थित व वैज्ञानिक अवधारणा के रूप में प्रस्तुत करने का श्रेय इमाइल दुर्खीम को दिया जाता है। दुर्खीम ने स्पेन्सर से आगे बढ़ते हुए सावयवी सादृश्यता के स्थान पर प्रकार्य की अवधारणा को 'समाज एक स्वतः स्फूर्त है' के अर्थ में प्रयोग किया।
- दुर्खीम के अनुसार सामाजिक घटनाओं का अस्तित्व उन फलप्रद परिणामों पर निर्भर नहीं करता, जिन्हें वे पैदा करती हैं।
- प्रकार्य की अवधारणा को अधिक विस्तृत रूप में मर्टन प्रस्तुत करते हैं। यहाँ वे प्रकार्य, प्रकट व अप्रकट प्रकार्य, अकार्य व दुष्प्रकार्य जैसी अवधारणाओं को प्रतिपादित करते हैं।

प्रकार्यवाद

- समाजशास्त्र का वृहत सिद्धांत (Macro)
- प्रकार्यवाद, सिद्धांत निर्माण करने का एक ऐसा प्रारूप है, जो समाज को संपूर्णता में देखने की बात करता है।
- प्रकार्यवाद के अनुसार समाज एक जटिल संरचना है, जिसकी सभी इकाइयां एकजुटता व व्यवस्थापन के लिए एक साथ मिलकर कार्य करती है।
- **समाज = संरचना** अर्थात् समाज को एक संपूर्ण इकाई के रूप में देखना चाहिए, न कि अलग–अलग भाग के रूप में।
- हर्बर्ट स्पेन्सर (सावयवी सादृश्यता) – **अंग : शरीर, सामाजिक संस्थाएं : समाज**

प्रकार्यवाद

- **प्रकार्यवाद के प्रमुख प्रश्न**
  - समाज प्रकार्यात्मक रूप से क्रियाशील कैसे रहता है?
  - समाज की इकाइयां कौन हैं तथा वे क्यों एक–दूसरे से अंतर्संबंधित रहती हैं?
  - किसी भी सामाजिक घटना के इच्छित व अनिच्छित परिणाम कौन हैं?
- **प्रकार्यवादी सिद्धांत = सामाजिक संरचना के बृहत परिप्रेक्ष्य पर केंद्रित होना, न कि सूक्ष्म पर।**
- प्रकार्यवाद समाज को अंतर्संबंधित भागों की एक ऐसी स्वचालित व्यवस्था के रूप में देखने का सरल दृष्टिकोण है, जिसके निर्माणक भागों के सामाजिक संबंधों में संरचना तथा एक वस्तुनिष्ठ नियमितता होती है।

शास्त्रीय प्रकार्यवाद

- इसे सावयवी प्रकार्यवाद भी कहा जाता है।
- शास्त्रीय प्रकार्यवाद को हम प्रकार्यवादी परिप्रेक्ष्य की बुनियाद के रूप में अवलोकित कर सकते हैं। इसके प्रमुख विद्वानों में अगस्त कॉम्ट, हर्बर्ट स्पेन्सर तथा इमाइल दुर्खीम उल्लेखनीय हैं।
- यह सावयवी सादृश्यता पर आधारित सिद्धांत है, जिसके अनुसार समाज एक ऐसी संगठित व आत्म–अनुरक्षित व्यवस्था है, जिसमें विरोधी परिवेश की स्थिति में भी संतुलन बना रहता है।
- समाज के अतिजीवन के लिए यह आवश्यक है कि व्यवस्था की आवश्यकताओं की आपूर्ति हेतु इसकी विभिन्न सामाजिक प्रक्रियाओं का आपस में सहज रूप में तालमेल हो।
- प्रत्येक प्रक्रिया, संस्था अथवा इकाई कोई न कोई प्रकार्य अदा करती है, जो समाज की जरूरतों को पूरा करती है तथा इस प्रकार वे समाज की संरचना एवं इसके संतुलन को बनाए रखने में सहायता प्रदान करते हैं।

शास्त्रीय प्रकार्यवाद

- **अगस्त कॉम्ट** **(त्रि स्तरीय नियम)**
- **हर्बर्ट स्पेन्सर** **(सावयवी सादृश्यता)**
- **इमाइल दुर्खीम** **(सामाजिक तथ्य)**

श्रम विभाजन: समाज एक ऐसा सावयव है, जिसके सभी भाग एक साथ मिलकर आवश्यक भूमिकाएँ निभाते हैं, लेकिन वे पृथक होकर कोई प्रकार्य नहीं कर पाते।

एनोमी: सामाजिक प्रतिमानों का अभाव/ प्रतिमानहीनता (समुदाय/समाज तथा व्यक्ति के सामाजिक अलगाव की दशा)

टोटमवाद

Next Class:

समाजशास्त्रीय सिद्धांत: प्रकार्यवाद II

(Sociological Theory: Functionalism II)